International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 8, August 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

राजभाषा हिन्दी उद्भव, विकास एवं भविष्य की सम्भावनाएँ

डॉ० रेखा गुप्ता
हिन्दी विभाग
अवध गर्ल्स डिग्री कॉलेज, लखनऊ

सार

आज हिन्दी को जिस रूप में हम देखते हैं उसकी बाहरी आकृति भले ही शताब्दियों पुरानी हो किन्तु उसकी जड़े संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश रूपी गहरे धरातल में फैली है। वैज्ञानिक आधार पर विश्व स्तर पर किए गए भाषा परिवारों के वर्गीकरण के अनुसार हिन्दी को भारतीय आर्य भाषा परिवार से उत्पन्न माना जाता है। अतः हिन्दी, आनुवांशिक रूप से आर्य भाषा संस्कृत से सम्बद्ध है। हिन्दी राष्ट्र के अंतरंग की भाषा है। हिन्दी संस्कृत की वैध उत्तराधिकारी है और आधुनिक भारतीय भाषा व्यवस्था में उसका वही स्थान है जो प्राचीन काल में संस्कृत का था।

हिन्दी भाषा के विकास की प्रक्रिया आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के साथ प्रारम्भ होती है। खड़ी बोली या खिचड़ी भाषा के रूप में पहचानी जाने वाली हिन्दी भाषा का वास्तविक विकास इन चार चरणों में माना जा सकता है।

आदिकाल (मुगलकाल से पूर्व का हिन्दू शासनकाल)
मध्यकाल (मुस्लिम शासनकाल)
आधुनिक काल (ब्रिटिश शासनकाल)
वर्तमान काल (आजादी के बाद का काल)

भाषा, मनुष्य के भावों व विचारों के आदान प्रदान का सषक्त साधन है।हिन्दी वर्तमान में उपेक्षित सी. असंगठित सी, किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में है, लेकिन एक महत्वपूर्ण कार्य बिना गाल बजाए सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुआ है जो निराशा को आशा में बदलने, अबला को सबला बनाने में बहुत सहायक सिद्ध होगा।कम्प्यूटर पर हिन्दी में आलेख, सूचियाँ डेटा बेस, पुस्तकें आदि के लिए टूल्स बन गये हैं। इंटरनेट से हिन्दी में ई मेल, बलॉग, कॉन्फ्रेसिंग कर सकते हैं। फॉन्ट, कन्वर्जन यूटिलिटी, ऑफिस सॉफ्टवेयर, ओ. सी.आर., बोल पहचान, वर्तनी जांच, ट्रान्सलेशन सपोर्ट मुक्त रूप में मिल रहे हैं, बहुतेरे मुफ्त में भी। आज एकमत होना है, कोर्डिंग के लिए युनीकोड, न्छप्ब्व्क्मद्रए करेंट के लिए, ग्डरूद्ध का प्रयोग करें। सीमेंटेक और सर्विसेज के समाहरण पर विकास कार्य तेजी से करने की आवश्यकता है। हिन्दी संस्थान, इन्टरनेट पर डिक्शनरी, थेसारस, व्यवहार कोष, टैग कार्पोरा, व्याकरण जाँच नियमावली, उत्तम लेखों का संग्रह, शोध पत्र, अद्यतन शोध विकास का सार अनुसृजन इंटरनेट पर डालें। याहू, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट आदि पर हिन्दी भी उपलब्ध है।इसके अलावा यदि भारत सरकार कुछ नीतिगत निर्णय की घोषणा करें तो यह कार्य और भी सहजता से हो सकता है।

संकेत भाब्द....हिन्दी, राजभाषा, भाषा, शक्षा,राष्ट्रभाषा,स्वतंत्रता,मानकीकरण

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

‘राजभाषा हिन्दी उद्भव, विकास एवं भविष्य की सम्भावनाएँ

अक्षर–अक्षर स्वर्णिम इसका

शब्द–शब्द अनमोल

जन्मी भारत की पुण्य धरा पर

हिन्दी की जय–जयबोल‘‘

हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में प्रचलित धारणाओं पर विचार करते समय हमारे सामने, हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का प्रश्न दसवीं शताब्दी के आस पास की प्राकृताभास भाषा तथा अपभ्रंश भाषाओं की ओर जाता है। अपभ्रंश शब्द की व्युत्पत्ति और जैन रचनाकारों की अपभ्रंश कृतियों का हिन्दी से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जो तर्क और प्रमाण हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में प्रस्तुत किये गये हैं उन पर विचार करना आवश्यक है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है।

साहित्य की दृष्टि से पद्यबद्ध जो रचनाएं मिलती हैं व दोहा रूप में ही हैं और उनके विषय, धर्म, नीति, उपदेश आदि प्रमुख हैं। राजाश्रित कवि और चारण नीति श्रृंगार, शौर्य पराक्रम आदि के वर्णन से अपनी साहित्य रूचि का परिचय दिया करते थे। यह रचना परम्परा आगे चलकर शौरसेनी अपभ्रंश या ‘‘प्राकृ ताभास हिन्दी‘‘ में कई वर्षो तक चलती रही. पुरानी अपभ्रंश भाषा और बोलचाल की देशी भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता गया। इस भाषा को विद्यापति ने देसी भाषा‘‘ कहा है किन्तु यह निर्णय करना सरल नहीं है कि हिन्दी शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिए कब और किस देश में प्रारम्भ हुआ, इतना अवश्य सुना जाता है कि प्रारम्भ में विदेशी मुसलमानों ने हिन्दी शब्द का प्रयोग किया था और इससे उनका अभिप्राय–‘‘भारतीय भाषा‘‘ से था।

आज हिन्दी को जिस रूप में हम देखते हैं उसकी बाहरी आकृति भले ही शताब्दियों पुरानी हो किन्तु उसकी जड़े संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश रूपी गहरे धरातल में फैली है। वैज्ञानिक आधार पर विश्व स्तर पर किए गए भाषा परिवारों के वर्गीकरण के अनुसार हिन्दी को भारतीय आर्य भाषा परिवार से उत्पन्न माना जाता है। अतः हिन्दी, आनुवांशिक रूप से आर्य भाषा संस्कृत से सम्बद्ध है।

2‘‘वैज्ञानिक डॉ० जॉन बीम्स‘‘ ने भारतीय आर्य परिवार की भाषाओं में हिन्दी के अलावा पंजाबी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, उड़िया और बंगाल की भाषाओं को समाहित करते हुए लिखा है।’’

3 ‘‘हिन्दी राष्ट्र के अंतरंग की भाषा है। हिन्दी संस्कृत की वैध उत्तराधिकारी है और आधुनिक भारतीय भाषा व्यवस्था में उसका वही स्थान है जो प्राचीन काल में संस्कृत का था।हिन्दी भाषा के विकास की प्रक्रिया आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के साथ प्रारम्भ होती है। खड़ी बोली या खिचड़ी भाषा के रूप में पहचानी जाने वाली हिन्दी भाषा का वास्तविक विकास इन चार चरणों में माना जा सकता है।’’

आदिकाल (मुगलकाल से पूर्व का हिन्दू शासनकाल)
मध्यकाल (मुस्लिम शासनकाल)
आधुनिक काल (ब्रिटिश शासनकाल)
वर्तमान काल (आजादी के बाद का काल)

1947 से लेकर आज तक का समय हिन्दी का वर्तमान कहलाता है। देश की आजादी के साथ ही हमें भौगोलिक स्वतन्त्रता के साथ साथ भाषागत स्वतन्त्रता भी प्राप्त हो गई है। इस काल में हिन्दी का आधुनिकीकरण और मानकीकरण हुआ। संविधान की धारा 343 के अन्तर्गत हिन्दी भारत की राजभाषा घोषित हुई और धारा 353 हिन्दी विकास की दिशा तय हो गई, जिसमें शासन की ओर से हिन्दी के विकास के लिए किए जाने वाले प्रयासों को भी तय किया गया और विशद विचार मंथन के बाद महात्मा गाँधी तथा अन्य नेताओं के उद्‌गारों के परिणाम स्वरूप 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया गया और भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ और तभी से देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी विधिवत भारत संघ की राजभाषा है।

यह शाश्स्वत सत्य है कि भाषा, मनुष्य के भावों व विचारों के आदान प्रदान का सषक्त साधन है।

4 "हिन्दी वर्तमान में उपेक्षित सी. असंगठित सी, किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में है, लेकिन एक महत्वपूर्ण कार्य बिना गाल बजाए सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुआ है जो निराशा को आशा में बदलने, अबला को सबला बनाने में बहुत सहायक सिद्व होगा।"

कम्प्यूटर पर हिन्दी में आलेख, सूचियाँ डेटा बेस, पुस्तकें आदि के लिए टूल्स बन गये हैं। इंटरनेट से हिन्दी में ई मेल, बलॉग, कॉन्फ्रेसिंग कर सकते हैं। फॉन्ट, कन्वर्जन यूटिलटी, ऑफिस सॉफ्टवेयर, ओ. सी.आर., बोल पहचान, वर्तनी जांच, ट्रान्सलेशन सपोर्ट मुक्त रूप में मिल रहे हैं, बहुतेरे मुफ्त में भी। आज एकमत होना है, कोर्डिंग के लिए युनीकोड, न्छप्ब्व्क्मद्रए करेंट के लिए, ग्डरू्द्व का प्रयोग करें। सीमेंटेक और सर्विसेज के समाहरण पर विकास कार्य तेजी से करने की आवश्यकता है। हिन्दी संस्थान, इन्टरनेट पर डिक्शनरी, थेसारस, व्यवहार कोष, टैग कार्पोरा, व्याकरण जाँच नियमावली, उत्तम लेखों का संग्रह, शोध पत्र, अद्यतन शोध विकास का सार अनुसृजन इंटरनेट पर डालें। याहू, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट आदि पर हिन्दी भी उपलब्ध है।

इसके अलावा यदि भारत सरकार कुछ नीतिगत निर्णय की घोषणा करें तो यह कार्य और भी सहजता से हो सकता है। जैसे...

5. "1. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम राजभाषा हो नॉलेज कमीशन अपनी सिफारिषों में कक्षा 1 से अंग्रेजी शिक्षा की अनिवार्यता पर संशोधन करें।

2. विज्ञान और भाषा का सम्बन्ध दृढ, किया जाये। 1980 के दशक में छब्ल्ज् ने हिन्दी में विज्ञान पुस्तक लेखन की पहल की। यह प्रशंसनीय कार्य था। इसे फिर से शुरू कराया जाए। इसी प्रकार का हिन्दी में सुबोध लेखन दूसरे विभागों में भी अनिवार्य हो ।

3. ''छत्क्ृए ढठैमए छ्प्पै ''जैसी संस्थाएं स्कूल स्तर पर पुस्तक लेखन का कार्य मौलिक रूप में करावें, उसके अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुवाद किये जाए।

4. उच्चतर शिक्षा में प्रोजेक्ट हिन्दी में भी अनिवार्य हो, तभी समाज के प्रति संवेदशीलता बढ़ेगी और शोधपरक ज्ञान की मोटे तौर पर जानकारी जन सामान्य को मिलती रहेगी।

5. भारत सरकार द्वारा वित्तीय अनुदान प्राप्त सभी सेमीनार, कॉन्फ्रेंस, सिम्पोजियम, सांगोष्ठियों में शोध पत्र 20 प्रतिशत हिन्दी में हो । पेनल में हिन्दी मीडिया का प्रतिनिधि अवश्य हो। सिफारिशें सम्बन्धित विभाग की बेबसाइट पर भी हिन्दी में अवश्य हो।

6. अनुसृजन परियोजना के माध्यम से, शोध सहायक और भाषाविद् की टीम हिन्दी मे अनुसृजित करें।

7. कृषि विस्तार परियोजना की तर्ज पर प्ज् क्लीनिक का आयोजन किया जाए जिनमें लोक भाषा हिन्दी में ओपन साफ्टवेयर के प्रयोग संवर्धन और इसमें कठिनाइयों के निराकरण तथा उद्यमियों की प्ज् समस्याओं का समाधान दिया जाए।

8. हिन्दी भाषा में संबंधित संस्थाएं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वै.त. शब्दावली आयोग आदि की एक उच्चस्तरीय समीक्षा समिति हो। इसमें 2ध्3 विज्ञानी सदस्य हो और समिति हर तिमाही इनके लक्ष्य और उपलब्धि का मार्गदर्शन एवं आडिट करे।

9. तकनीकी शिक्षा में हिन्दी का संक्षिप्त भाषा-विज्ञान और विज्ञान लेखन विषय को भी जोड़ा जाए। इसकी रूपरेखा बनायें।

10. हिन्दी सॉफ्टवेयर की जाँच और प्रयोग संवर्धन के लिए हिन्दी संस्थाओं का संघ जिम्मेदारी ले, भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की फीडबैक देकर गुणवत्ता और प्रसार को बढ़ावा दें।"

अन्त में ये कहना चाहेंगे कि

6. "हम जितने ही बल एव क्रियाशीलता के साथ प्रयास करेंगे, उतनी ही द्रुतगति के साथ हम अपनी भाषा की त्रुटियों को दूर करेंगे और उसे 82 करोड़ व्यक्तियों की राष्ट्रभाषा के समान बलशाली और गौरव युक्त बनायेंगे, उतना ही शीघ्र हमारे साहित्य सूर्य की रश्मियाँ दूर दूर तक समस्त देशों में पड़कर भारतीय संस्कृति, ज्ञान और कला का सन्देश पहुँचायेंगी, उतना ही शीघ्र हमारी भाषा में दिये गये भाषण संसार की विविध रंग स्थलियों में गुंजरित होने लगेंगे और उससे मनुष्य जाति मात्र की गति मति पर प्रभाव पड़ता हुआ दिखलाई देगा, और उतने ही शीघ्र एक दिन और उदय होगा, और वह होगा तब, जब देश के प्रतिनिधि उसी प्रकार, जिस प्रकार आयरलैण्ड के प्रतिनिधियों ने इंग्लैण्ड से अन्तिम सन्धि करते और स्वाधीनता प्राप्त करते समय अपनी विस्मृत भाषा गैलिक में सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर किये थे, भारतीय स्वाधीनता के किसी स्वाधीनता पत्र पर हिन्दी भाषा में और नागरी अक्षरों में अपने हस्ताक्षर करते हुए दिखाई देंगे।"

© Associated Asia Research Foundation (AARF)

7. "हिन्दी मेरी भाषा है

हिन्दी मेरी आशा है।

जगमग ज्योतिजले हिन्दीकी

, यहीं कलम का ढ़ाँचा ह

संदर्भित ग्रन्थ

1. M.Jagran Junction.com राजभाषा हिन्दी (कविता)
2. https://hi.m.wikipediya.org हिन्दी साहित्य का इतिहास
3. https://www.google.co.in/sear
4. htts.googlewebsite.com wikibooks ''हिन्दी का वर्तमान और भविष्य की दृष्टि'' डा. ओम प्रकाश
5. https.//hi.m.wikibooks.org (हिन्दी का वर्तमान और भविष्य की दृष्टि'') डा. ओम प्रकाश
6. https.//www.bharatdarshan.conz/magazine/literature/439/hindibhasha (हिन्दी साहित्य सम्मेलन के गोरखपुर अधिवेशन में अध्यक्ष पद से दिये भाषण के अंश ।
7. http//m.hindi.webdunia.com/ (हिन्दी भाषा पर कविता) शम्भूनाथ